बौद्ध साहित्य–एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 रामराज*

बौद्ध धर्म अपनी लम्बी यात्रा के दौरान विभिन्न समय और स्थानों में जिन विलक्षण विकासक्रमों से होकर गुजरा है। कम से कम उनके अत्यधिक शिक्षात्मक और प्रबोधक इतिहास के वर्णन के बिना इस धर्म की कोई भी प्रस्तुति अतयंत अधूरी होगी। यह इतिहास एक तुलनात्मक दृष्टिकोण से विशेष तौर पर रोचक है। बौद्ध धर्म का प्रारम्भ एक पूर्ण दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांत से होता है। जिसे प्रखर बौद्धिक शक्ति और श्रेय संस्कृति वाले व्यक्तियों ने तैयार किया था। इसका उदय एक उन्नतिशील और विजयगामी कौम में हुआ, जिनमें उनके वर्ण और नस्ल के प्रति उनकी उपलब्धियों और उनकी प्रगति के प्रति अभिमान भरा था। इसने एक ऐसे विचार की वकालत की जो अनेक अर्थों में उस समय की उपलब्धि से कहीं आगे था, उससे भी कहीं आगे था। जिसे आज के औसत दार्शनिक और धार्मिक मानस ने उपलब्ध किया है।

आधुनिक युग में सर्वप्रथम पाश्चात्य विद्वान टर्नर ने बंगाल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में पालि गंन्थों पर एक लधु श्रृंखला प्रकाशित की और बाद में सन् 1837 में महावंश का एक सम्पूर्ण उसके एक अंग्रेजी अनुवाद और एक अत्यंत रोचक प्रस्तावना लेख के साथ प्रकाशित किया गया। प्रथम संस्करण को व्यापक मान्यता मिली किंतु टर्नर की मृत्यु के बाद उनके काम को आगे जारी रखने के लिए कोई नहीं मिला। यूरोपीय विद्वान चाइल्र्डस ने प्रकाशित ग्रन्थों से बौद्ध धर्म पर प्रकाशित विद्ववतापूर्ण यूरोपीय ग्रन्थों से सावधानी पूर्वक संदर्भ जोड़े।

बौद्ध धर्म का सबसे प्रमुख ग्रन्थ त्रिपिटक है। पिटको की सूची, प्रत्येक ग्रन्थ की विषय सामग्री पर टिप्पणियों सहित बौद्ध धर्म[1] विषयक टी0डब्लू0 रीस डेविड की लघु नियमावली में है। रीसडेविड की एक अन्य रचना मिलिन्द में प्रस्तुत एक अन्य सूची में 29 ग्रन्थों की पृष्ठ सख्या दी गयी है।[2] पहले पिटक विनय पिटक में वह सब है जिसका सम्बंध भिक्खु संघ से है, कि संघ की स्थापना कैसे हुई और भिक्खुओं और भिक्खुणियों को किन–किन नियमों का पालन करना है। दूसरे पिटक सुत्त में स्वयं धर्म की सच्चाइयॉ है। जिन्हें विविध दृष्टिकोंणों से और अत्यंत विविधतापूर्ण शैली में प्रस्तुत किया गया है। तीसरा पिटक अभिधम्म में उस मनोवैज्ञानिक व्यवस्था की ओर उससे उत्पन्न होने वाले विभिन्न बिन्दुओं की ओर भी पूर्ण तथा अधिक विस्तृत विवेचना दी गयी है। विनय को तीन भागों, सुत्त विभंग, स्कंध और परिवार में बांटा गया है।

सुत्त भारत का एक अत्यंत प्राचीन साहित्यिक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'धागा' और इसका प्रयोग एक प्रकार के ग्रंथ के लिए होता है। इस शब्द को बौद्धों ने एक प्रवचन, एक अध्याय, एक पवित्र ग्रंथ के लघु अंश के रुप में अपना लिया।[3] इसमें कोई एक बात उठायी जाती है और उसका कमोवेश समाधान कर दिया जाता है। यह सुत्त संघ के सभी नियमों का लघु कथन है। जिसे पातिमोक्ख भी कहा जाता है विनय में पहला ग्रन्थ सुप्तविभंग का पूरा प्रतिपादन है इस ग्रन्थ में सभी 227 नियमों का क्रमवार एक नियत योजना अथवा पद्यति से विवेचन किया गया है। इसका अनुमानित समय लगभग ईसा पूर्व 400 है। विनय पिटक की दूसरी पुस्तक को बस, स्कंध अथवा ग्रंथ कहा जाता है। इसमें एक के बाद एक संघ से सम्बंधित उन सभी बातों पर विचार किया गया है। जो पातिमोक्ख के नियमों में इतने अधिक शब्दों में नहीं की गयी है।

संघ के सदस्यों के भोजन से सम्बंधित सामान्य नियम को पातिमोक्ख में बिल्कुल स्पष्ट रुप से प्रस्तुत किया गया है। सुबह जल्दी पेय के रुप में दूध अथवा पानी के साथ फल व रोटियों का हल्का आहार होता था फिर 11 और 12 के बीच दिन का मुख्य भोजन किया जाता था। जिसमें आम तौर पर तरकारी और चावल होता था। इस विनियम को अत्यधिक महत्व दिया जाता था कि यह भोजन सूर्य की छाया पडने के बाद तक नहीं चलेगा।[4] विनय शीर्षक के अन्तर्गत विधान की एक और पुस्तक सम्मिलित है इसका नाम परिवार है। यह बहुत छोटी है और एक प्रकार से विद्यार्थियों की नियमावली जैसी है। जिसमें स्मरण शक्ति बढाने के लिए सूचियों व पहेलियों के अनेक समूह दिये गये है।

सुत्तपिटक प्रवचनों की टोकरी है जिसमें प्रचीनतम बौद्ध दर्शन का ज्ञान है। समूचे पिटक में चार महत्वपूर्ण निकाय (अथवा संकलन) है और इसमें से पहले दो निकायों से मिलकर एक ग्रन्थ बनता है यह दो खण्डों में है दीघ व मज्झिम निकाय। इनमें भगवान बुद्ध के 186 संवाद हैं। जिन्हें इनकी लम्बाई के अनुसार क्रम दिया गया है। इसमें बौद्ध जीवन दृष्टि के सभी धार्मिक व दार्शनिक बिन्दुओं की विवेचना की गयी है। ये सभी सारे के सारे 186 संवाद पालि टैक्स्ट सोसाइटी के लिए मूल पालि में सम्पादित किये गये हैं। और लगभग 20 का अनुवाद अंग्रेजी में किया गया है। अगुंतरनिकाय नामक पहले संकलन में बौद्ध धर्म के उन सभी बिन्दुओं को व्यवस्थित क्रम दिया गया है जो अभिव्यक्ति के योग्य हैं। इसमें व्यवहारिक रुप में बौद्ध धर्म का अधिकांश मनोविज्ञान व नीतिशास्त्र सम्मिलित है। संयुक्तनिकाय पांच खण्डों में विभाजित है।

तीसरा व अंतिम पिटक अभिधम्म पिटक है इसमें 7 ग्रन्थ हैं और इनमें अभी केवल तीन का प्रकाशन पालि टैक्स्ट सोसाइटी ने किया है। अभिधम्म का अर्थ अभी तक 'तत्वमीमांसा' बताया गया है। किन्तु यह पूरी

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पी0बी0पी0जी0 कॉलेज प्रतापगढ़ सिटी

तरह भ्रामक अनुवाद है। बौद्ध मत के अनुसार हम उसके सिवाय कुछ और नही जानते जिसे अनुभव से प्राप्त किया गया है, परिघटनाओं का बोध। इस प्रकार के दर्शन में तत्वमीमांसा के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। परमार्थसत् पर कोई चर्चा नहीं की गयी है। स्वयं बौद्ध लोग अभिधम्म से क्या समझते हैं यह इस शब्द की व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है जो महान बौद्ध विद्वान व महान टीकाकार बुद्धघोष ने प्रस्तुत किया है। आर्नल्ड सी टेलर द्वारा खोजे गये इस अंश का सम्पादन व अनुवाद जनरल ऑफ आव द रायल ऐशियाटिक सोसाइटी के ताजा अंक में किया है।[5] उस महानतम विद्वान के अनुसार अभिधम्म का अर्थ मात्र धम्म का विस्तार वृहद उपचार, विस्तृत प्रतिपादन होता है। समूचे रुप में पहले ही प्रकाशित तीनों ग्रन्थ का पूर्व प्रकाशित सार रीस डेविड[6] द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पहले ही प्रकाशित हो चुकी पुस्तक धम्मसंगिनी अथवा ''अवस्थाओं की गणना'' है और इसमें धार्मिक लोगों द्वारा प्राप्त चित्तावस्थाओं का विश्लेषण किया गया है।[7] चौथी पुस्तक कथावत्थु अथवा 'मतविवरण है' और यह एक मात्र पुस्तक है जिसके लेखक की तिथि हमें पता है। इसे मोग्गलीपुत्ततिस्स ने सम्राट अशोक के दरबार में लगभग 250 ईशापूर्व में लिखा था या यों कहिए संकलन किया था, क्योंकि तब पुस्तकें लिखी नहीं जाती थीं।

धम्मपद का प्रकाशन 1885 में फॉसबॉल ने किया था। यह एक प्रकार का अन्य संकलन है किन्तु इसमें सारी की सारी कविताऐं नहीं है। इसमें बौद्ध स्वशिक्षण अथवा आचारनीति के 26 चुने हुये बिन्दुओं में से प्रत्येक पर 10 से 20 छंदों को एक स्थान पर रखा गया है। साधारण तौर पर इस तरह की गाथाऐं जो छंदों की व्याख्याऐं होती थीं और जिसके बगैर अकसर छंद ही समझ से परे होते थे। भारत में पारम्परिक टिप्पणी के रुप में एक दूसरे तक पहुँचती थी। दो उदाहरण ऐसे हैं जिनमें बौद्धों ने स्वयं गाथाओं व छंदों को भी अपने धर्म विधान में विविध परिशिष्ट के रुप में सम्मिलित किया है। एक उदाहरण 'उदान' अथवा 'आनन्दमय कथन' का है। बुद्ध को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि वह अपने लम्बे धम्म जीवन में किसी घटना अथवा कथन अथवा कर्म से इतने द्रवित हो जाते थे कि वह अपनी दबी हुयी भावनाओं केा एक लघु आनन्दपूर्ण कथन में व्यक्त करते थे। दूसरा उदाहरण 'इतिवुत्तकम' का है। इसमें 120 लघुवंश है जिसमें से प्रत्येक का समापन बुद्धों के एक संश्लिष्ट गहन कथन में होता है और इन्हें 'इतिवुक्तक भगवत' के साथ प्रस्तावित किया गया है जिसका अर्थ है 'तथागत ने ऐसा कहा था'

पिटक में थेरगाथा–थेरीगाथा नाम का संग्रह भी है। जिसमें कथित तौर पर संघ के बुद्धकालीन 264 प्रमुख पदों (अर्थात भिक्खुओं) और 73 प्रमुख थेरियों (अर्थात भिक्खुणियों) के छंद संकलित हैं। छंदों की व्याख्या करने वाली कहानियों में लेखक व लेखिका का एक संक्षिप्त जीवन वृतांत है और यह टीका के रुप में एक दूसरे के तक पहुँचते रहे हैं। पुरुषों के छंदों की टीका अभी प्रकाशित नहीं हुई है। किंतु स्त्रियों के छंदों के टीका को एडवर्ड मूलर ने पालिटेक्स्ट सोसाइटी के लिए सम्पादित किया है।

प्रसिद्ध अमेरिकी विद्धान लैनमैन ने पालिटेक्स्ट सोसाइटी के लिए निदृसः और सुत्तनिपात का प्रकाशन किया है। जो भगवान बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र ने लिखी थी। यह अंतिम ग्रंथ है जिसे त्रिपिटक में सम्मिलित किया गया है। फॉसवाल[7] द्वारा सम्पादित और अनुदित[8] किया गया है इसमे कविताओं के 5 ग्रन्थ हैं जिनमें से पहले चार में 54 कविताऐं अलग हैं और इनमें प्रत्येक 1 या 2 पृष्ठ की ही है। किंतु पांचवा ग्रन्थ एक कविता है जो लगभग निष्चय ही एक स्वतंत्र समग्र रचना है। एक अन्य परिशिष्ट है जो किसी अज्ञात लेखक की रचना है इनमें से एक बुद्धवंश है जो उन बुद्धों (पच्चेक बुद्धों) की किंवदंतियों के व्याख्यान ज्ञापन हैं जो कथित रुप से बौद्ध धर्म के संस्थापक ऐतिहासिक बुद्ध से पहले हुये हैं। दूसरा ग्रन्थ चरियापिटक है– एक अंश जो कभी पूरा नहीं हुआ जिसमें स्वयं ऐतिहासिक बुद्ध के कथित 34 पूर्व जन्मों के विषय में एक छोटे –छोटे छंद दिये गये हैं।

दो और लघु कविताऐं हैं जिनमें भावी जीवन से सम्बधित किंवदंतियों को छंद में प्रस्तुत किया गया है। इन्हें क्रमशः पेतवत्थु और विमानवत्थु कहा जाता है और इसका सम्पादन पालि टेक्स्ट सोसाइटी के लिए किया गया है। किन्तु इसका अनुवाद अभी तक नही किया गया है। जातक प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं जो भगवान बुद्ध के 550 जन्मों की कहानियॉ हैं किंतु वास्तव में– दंत कथाऐं, परि कथाऐं, पहेलियॉ, प्राचीन काल की किंवदंतियॉ हैं। चतुर व बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णय प्रचलित अंधविश्वासों पर विनोदपूर्ण परिहास है।

संदर्भ –

1. बुद्धिज्म, सोलहवां संस्करण, अध्याय एक का परिशिष्ट।
2. क्वेस्चन्स आव किंग मिलिंद, खण्ड 1 पृ0 36।
3. रीस डेविड, बौद्ध धर्म का इतिहास और साहित्य, पृ0 45।
4. पचितिय 37 खुद्दक पाठ पैरा 2, चुल्लवग्ग 12,2,8 राइसडेविड, बुद्धिज्म पृ0 160–164।
5. जे0आर0एस0 1894 पृ0 560।
6. वही, 1892, पृ0 1–37।
7. मूलर द्वारा पालिटेक्स्ट सोसाइटी द्वारा सम्पादित।
8. पालिटेक्स्ट सोसाइट, लंदन 1885 और 1893।
9. आक्सफोर्ड, 1886।

●